चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	28.3.26	5	7-8

हकृवि में गुलाबी सुंडी प्रबंधन हेतु समीक्षा बैठक आयोजित

हिसार, 27 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए

कुलपति ने संबंधित वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे क्षेत्र में नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के साथ-साथ किसानों को कीट प्रबंधन संबंधी नवीनतम तकनीकों एवं सावधानियों की जानकारी उपलब्ध कराएं। गुलाबी सुंडी के प्रभावी नियंत्रण के लिए समय पर निगरानी, उचित कीटनाशकों का प्रयोग तथा समन्वित कीट प्रबंधन तकनीकों का पालन अत्यंत आवश्यक है। कुलपति ने कहा कि किसान कपास फसल की बिजाई (15 अप्रेल से 15 मई) समय पर करना सुनिश्चित करें क्योंकि देर से बिजाई करने पर फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक होता है। उन्होंने प्रमाणित एवं अनुशंसित बीजों का प्रयोग करने, समय-समय पर फसल का निरीक्षण करने, संक्रमित टीड़ों को तोड़कर खेत से बाहर नष्ट करने, फसल चक्र अपनाने तथा फसल अवशेष एवं डंठलों को उखाड़ कर नष्ट करने की सलाह दी। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने हरियाणा के कपास परिदृश्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पंजाब राज्य की कपास से संबंधित रिपोर्ट डा. विजय कुमार तथा राजस्थान की रिपोर्ट डा. हरमिंदर सिंह ने प्रस्तुत की। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक (कपास) डा. राम प्रताप सिहाग ने गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए किए जाने वाले समुचित प्रबन्धों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	28.3.24	4	1-4

हकृवि में गुलाबी सुंडी के प्रकोप के समाधान पर मंथन

जागरण संवाददाता • हिसार : देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय की ओर से आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। किसानों को गुलाबी सुंडी के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भी विस्तृत विचार विमर्श किया गया। कुलपति ने संबंधित वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को निर्देश दिए कि के क्षेत्र में नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के साथ-साथ किसानों को कीट प्रबंधन संबंधी नवीनतम तकनीकों एवं सावधानियों की जानकारी उपलब्ध कराएं। गुलाबी सुंडी के प्रभावी नियंत्रण के लिए समय पर निगरानी, उचित कीटनाशकों का प्रयोग और समन्वित कीट प्रबंधन (आइपीएम) तकनीकों का पालन अत्यंत आवश्यक है। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग, डा. विजय कुमार, डा. हरमिंदर सिंह, डा. राम प्रताप सिहाग, डा. ऋषि कुमार, डा. रमेश कुमार यादव, डा. आरके गुप्ता और डा. सुरेन्द्र यादव मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए। • विज्ञप्ति

15 मई के बाद गुलाबी सुंडी का अधिक होता है प्रकोप

किसान कपास फसल की बिजाई (15 अप्रैल से 15 मई) समय पर करना सुनिश्चित करें क्योंकि देर से बिजाई करने पर फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक होता है। उन्होंने प्रमाणित एवं अनुशंसित बीजों का प्रयोग करने, समय-समय पर फसल का निरीक्षण करने, संक्रमित टीड़ों को तोड़कर खेत से बाहर नष्ट करने, फसल चक्र अपनाने और फसल अवशेष एवं डंठलों को उखाड़ कर नष्ट करने की सलाह दी। किसान अपने खेत में पड़ी नरमा की बनछटियों को बिजाई से पहले इन्हें अच्छी तरह से झाड़ कर रख लें और इनके अधखिले टिंडों एवं सुखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडी को रोका जा सके। उन्होंने बताया कि नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी टी संकर किस्म को 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंद नाशकों को मिलाकर छिड़काव न करें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.3.26	5	3-8

कपास की फसल को गुलाबी सुंडी के प्रकोप से बचाने के लिए आपसी तालमेल के साथ कार्य करने की जरूरत : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने की गुलाबी सुंडी के प्रकोप की समीक्षा

हिसार, 27 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। कुलपति प्रो. काम्बोज ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। किसानों को गुलाबी सुंडी के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भी विस्तृत विचार विमर्श किया गया। कुलपति ने संबंधित वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे क्षेत्र में नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के साथ-साथ किसानों को कीट प्रबंधन संबंधी नवीनतम तकनीकों एवं सावधानियों की जानकारी उपलब्ध कराएं। गुलाबी सुंडी के प्रभावी नियंत्रण के लिए समय पर निगरानी, उचित कीटनाशकों का प्रयोग तथा समन्वित कीट प्रबंधन (आईपीएम) तकनीकों का पालन अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ ही किसानों को प्रशिक्षण कार्यक्रमों, जागरूकता अभियानों और खेत स्तर पर निरीक्षण के माध्यम से जागरूक करने पर भी जोर दिया गया। इसके अलावा किसानों को समय-समय पर सलाह जारी करने और आवश्यकतानुसार मार्गदर्शन प्रदान करने के भी निर्देश दिए गए। कुलपति ने कहा कि किसान कपास फसल की बिजाई (15 अप्रैल से 15 मई) समय पर करना सुनिश्चित करें क्योंकि देर से बिजाई करने पर फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक होता है। उन्होंने प्रमाणित एवं अनुशंसित बीजों का प्रयोग करने, समय-समय पर फसल का निरीक्षण करने, संक्रमित टीड़ों को तोड़कर खेत से बाहर नष्ट करने, फसल चक्र अपनाने तथा फसल अवशेष एवं डंठलों को उखाड़ कर नष्ट करने की सलाह दी।

कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए।

उन्होंने कहा कि किसान अपने खेत में पड़ी नरमा की बनछटियों को बिजाई से पहले इन्हें अच्छी तरह से झाड़ कर रख लें और इनके अधखिले टिंडों एवं सुखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडी को रोका जा सके। उन्होंने बताया कि नरमा की बिजाई विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित बी टी संकर किस्म को 15 मई तक पूरी करें एवं कीटनाशकों एवं फफूंद नाशकों को मिलाकर छिड़काव ना करें। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बैठक में सभी का स्वागत किया और हरियाणा प्रदेश के कपास परिदृश्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पंजाब राज्य की कपास से संबंधित रिपोर्ट डॉ. विजय कुमार तथा राजस्थान की रिपोर्ट डॉ. हरमिंदर सिंह ने प्रस्तुत की। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक (कपास) डॉ. राम प्रताप सिहाग ने गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए किए जाने वाले समुचित प्रबन्धों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बैठक में डॉ. ऋषि कुमार ने उत्तरी क्षेत्र के कपास परिदृश्य के बारे में बताया जबकि विश्वविद्यालय के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रमेश कुमार यादव ने कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा कपास के बारे में की जाने वाली गतिविधियों के बारे में बताया। कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह ने गुलाबी सुंडी सहित कपास फसल से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से प्रकाश डाला। बैठक में विभिन्न बीज निर्माता कंपनियों के प्रतिनिधि और किसान भी मौजूद रहे। किसानों ने भी बैठक में कपास की फसल को गुलाबी सुंडी के प्रकोप से बचाने के लिए अपने सुझाव दिए। कार्यक्रम के अंत में एडीआर डॉ. आरके गुप्ता ने सभी का धन्यवाद किया जबकि मंच का संचालन डॉ. सुरेन्द्र यादव ने किया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	28.3.24	11	1-6

हकृवि में गुलाबी सुंडी प्रबंधन के लिए समीक्षा बैठक आयोजित

नरमा को गुलाबी सुंडी से बचाने के लिए तालमेल के साथ कार्य करें

कपास वैज्ञानिकों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों ने की समीक्षा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा है कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज शुक्रवार को विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। किसानों को गुलाबी सुंडी के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भी विस्तृत विचार विमर्श किया गया। कुलपति ने संबंधित वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे क्षेत्र में नियमित निगरानी सुनिश्चित करने के साथ-साथ किसानों को कीट प्रबंधन संबंधी नवीनतम तकनीकों एवं सावधानियों की जानकारी उपलब्ध कराएं।

हिसार। समीक्षा बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

देर से बिजाई करने पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप

कुलपति ने कहा कि किसान कपास फसल की बिजाई (15 अप्रैल से 15 मई) समय पर करना सुनिश्चित करें क्योंकि देर से बिजाई करने पर फसल में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक होता है। उन्होंने प्रमाणित एवं अनुशंसित बीजों का प्रयोग करने, समय-समय पर फसल का निरीक्षण करने, संक्रमित टींडों को तोडकर खेत से बाहर नष्ट करने, फसल चक्र अपनाने तथा फसल अवशेष एवं डंठलों को उखाड़ कर नष्ट करने की सलाह दी। किसान अपने खेत में पड़ी नरमा की बनछटियों को बिजाई से पहले इन्हें अच्छी तरह से झाड़ कर रख लें।

डीआर ने पेश की कपास परिदृष्य की रिपोर्ट

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बैठक में सभी का स्वागत किया और हरियाणा प्रदेश के कपास परिदृश्य की रिपोर्ट प्रस्तुत की। पंजाब राज्य की कपास से संबंधित रिपोर्ट डॉ विजय कुमार तथा राजस्थान की रिपोर्ट डॉ हरमिंदर सिंह ने प्रस्तुत की। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक (कपास) डॉ. राम प्रताप सिहाग ने गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए किए जाने वाले समुचित प्रबन्धों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बैठक में डॉ. ऋषि कुमार, डॉ. रमेश कुमार यादव, डॉ. करमल सिंह, एडीआर डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. सुरेन्द्र यादव आदि मौजूद थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	28.3.26	2	1-4

बैठक

एचएयू के कुलपति ने कपास वैज्ञानिकों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों संग की गुलाबी सुंडी प्रबंधन पर समीक्षा

गुलाबी सुंडी नियंत्रण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने कहा कि उत्तरी भारत में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के प्रकोप से निपटने के लिए सभी संबंधित पक्षों को मिलकर सामूहिक प्रयास करना आवश्यक है ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके।

वे शुक्रवार को विश्वविद्यालय में आयोजित गुलाबी सुंडी प्रबंधन की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में हरियाणा, पंजाब और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों, निजी बीज कंपनियों के प्रतिनिधियों और किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. कांबोज ने कहा कि गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए किसानों को नवीनतम तकनीकों और कीट प्रबंधन के बारे में जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की योजना बनाने, क्षेत्रीय निगरानी सुनिश्चित करने और समन्वित कीट प्रबंधन (आईपीएम) तकनीकों का पालन करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गुलाबी सुंडी के प्रभावी नियंत्रण के लिए उचित समय पर कीटनाशकों का प्रयोग करना भी महत्वपूर्ण है।

समीक्षा बैठक को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज। स्रोत : आयोजक

विशेषज्ञों का योगदान : बैठक में हरियाणा के अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग, पंजाब के डॉ. विजय कुमार और राजस्थान के डॉ. हरमिंदर सिंह ने अपने-अपने राज्यों में गुलाबी सुंडी के प्रकोप की स्थिति और नियंत्रण उपायों पर रिपोर्ट प्रस्तुत की। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक (कपास) डॉ. राम प्रताप सिहाग ने गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए किए जा रहे उपायों पर विस्तार से जानकारी दी।

इस मौके पर एचएयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रमेश कुमार यादव, कपास अनुभाग के अध्यक्ष डॉ. करमल सिंह, डॉ. आरके गुप्ता, डॉ. सुरेंद्र यादव मौजूद रहे।

किसानों के लिए सुझाव

प्रो. कांबोज ने किसानों से अपील की कि वे कपास की बिजाई 15 अप्रैल से 15 मई तक समय पर करें क्योंकि देर से बिजाई करने से गुलाबी सुंडी का प्रकोप बढ़ सकता है। उन्होंने किसानों को प्रमाणित और अनुशंसित बीजों का प्रयोग करने, खेतों का नियमित निरीक्षण करने और संक्रमित कीटों को नष्ट करने की सलाह दी। इसके अतिरिक्त उन्होंने कपास फसल में फसल चक्र अपनाने और अवशेषों को नष्ट करने पर भी जोर दिया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	27.03.2026	--	--

हकृवि में भारतीय शिक्षण मंडल का 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 28 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में भारतीय शिक्षण मंडल (हरियाणा प्रांत) के संयुक्त तत्वावधान में 57वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का विषय 'विकसित भारत - रामत्व आधारित शिक्षा' रहा, जिसमें शिक्षा, संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर गहन मंथन किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त संघचालक प्रताप सिंह, मुख्य वक्ता भारतीय शिक्षण मंडल के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. सच्चिदानंद जोशी तथा अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने की। मंच पर प्रान्त अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र भारद्वाज भी उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रताप सिंह ने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्तित्व और

राष्ट्र निर्माण की आधारशिला है। उन्होंने 'रामत्व' को सत्य, मर्यादा, कर्तव्यनिष्ठा और सेवा भाव का प्रतीक बताते हुए कहा कि यदि शिक्षा इन मूल्यों पर आधारित हो, तो भारत को विकसित राष्ट्र बनने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने युवाओं से आत्मानुशासन, कर्तव्यपरायणता और सेवा भावना अपनाने का आह्वान किया। मुख्य वक्ता डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने कहा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली हमारी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं पर आधारित है। उन्होंने 'रामत्व आधारित शिक्षा' को एक समग्र जीवन पद्धति बताते हुए कहा कि इससे व्यक्ति में नैतिकता, अनुशासन और संवेदनशीलता का विकास होता है। उन्होंने 'पंच परिवर्तन' की अवधारणा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यक्तिगत, सामाजिक, शैक्षिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय स्तर पर सकारात्मक बदलाव से ही विकसित भारत का सपना साकार हो सकता है। कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों के माध्यम से किसानों और विद्यार्थियों के हित में निरंतर कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करना हम सभी की जिम्मेदारी है और इसके लिए विद्यार्थियों को जिम्मेदार नागरिक बनाना आवश्यक है। प्रान्त अध्यक्ष डॉ. जितेंद्र भारद्वाज ने बताया कि भारतीय शिक्षण मंडल शिक्षा में भारतीयता को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है। उन्होंने शिक्षाविदों और विद्यार्थियों से अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहने का आह्वान किया। कार्यक्रम के अंत में प्रान्त उपाध्यक्ष प्रो. लवलीन मोहन ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर शिक्षण ज्ञान पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई तथा एक पुस्तक का विमोचन भी किया गया। मंच संचालन प्रो. कर्मपाल ने किया। समारोह में उत्तर क्षेत्र संगठन मंत्री गणपति तेती, विभाग संघ चालक पवन जिंदल, जिला सह कार्यवाह चंद्रशेखर, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, शिक्षाविद, अधिकारी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	27.03.2026	--	--

छोटी-छोटी बचत ही भविष्य में बड़ी सुरक्षा का आधार : प्रो. बलदेव राज काम्बोज

हकृवि में डाक विभाग की योजनाओं पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

-पाठकपक्ष न्यूज-

हिसार, 26 मार्च : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार में डाक विभाग की योजनाओं को लेकर एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कृषि अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी महाविद्यालय में आयोजित हुआ, जिसमें कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। वहीं हिसार डाक मंडल के अधीक्षक अनिल कुमार रोज विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. पवन कुमार तथा महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग भी मंच पर उपस्थित रहे। अपने संबोधन में प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि डाकघर की योजनाएं आज भी सबसे सुरक्षित और भरोसेमंद निवेश का माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि छोटी-छोटी बचत भविष्य में बड़ी आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती है और आमजन के सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाती है। विशिष्ट अतिथि अनिल कुमार रोज ने बताया कि हिसार डिविजन में 515 पोस्ट ऑफिस संचालित हैं और करीब 9.26 लाख बचत बैंक खाते हैं। इसके अलावा सुकन्या समृद्धि योजना के तहत 1.46 लाख खाते खोले गए हैं। उन्होंने यह भी बताया कि 23 पोस्ट ऑफिस आधार अपडेट और नए आधार बनाने की सुविधा दे रहे हैं, जबकि हिसार और सिरसा में पासपोर्ट सेवाएं भी उपलब्ध हैं। कार्यक्रम के आयोजक डॉ. पवन कुमार ने कहा कि डाक विभाग अब केवल पत्र भेजने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बैंकिंग, बीमा और डिजिटल सेवाओं का एकीकृत केंद्र बन चुका है। सहायक अधीक्षक कृष्ण कुमार रोहिल्ला ने डाक जीवन बीमा, बचत खाता, आवर्ती जमा (आरडी), सावधि जमा (एफडी), पब्लिक प्रोविडेंट फंड (पीपीएफ), सुकन्या समृद्धि योजना और वरिष्ठ नागरिकों की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में अधिष्ठाता डॉ. राजबीर गर्ग ने सभी का स्वागत किया, जबकि मंच संचालन व धन्यवाद प्रस्ताव डॉ. सतपाल ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डाक विभाग और विश्वविद्यालय के विभिन्न अधिकारी, कर्मचारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	27.03.2026	--	--

कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों ने की गुलाबी सुंडी के प्रकोप की समीक्षा

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने कहा कि देश के उत्तरी क्षेत्र में कपास की फसल में गुलाबी सुंडी की समस्या पर किसान व कृषि वैज्ञानिक लगातार नजर बनाए हुए हैं। इसके समाधान के लिए सभी हितधारक मिलकर कार्य करें ताकि किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाया जा सके। वे विश्वविद्यालय में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों के कपास वैज्ञानिकों, कृषि अधिकारियों व किसानों के लिए अनुसंधान निदेशालय द्वारा आयोजित समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

कुलपति ने कहा कि कपास की फसल में गुलाबी सुंडी के नियंत्रण के लिए हितधारकों के साथ मिलकर सामूहिक प्रयास करने होंगे। किसानों को गुलाबी सुंडी के बारे में जागरूक करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए भी विचार विमर्श किया गया। गुलाबी सुंडी के प्रभावी नियंत्रण के लिए समय पर निगरानी, उचित कीटनाशकों का प्रयोग तथा समन्वित कीट प्रबंधन (आईपीएम) तकनीकों का पालन अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि किसान अपने खेत में पड़ी नरमा की बनछटियों को बिजाई से पहले इन्हें अच्छी तरह से झाड़ कर रख लें और इनके अधखिले टिंडों एवं सुखे कचरे को नष्ट कर दें ताकि इन बनछटियों से निकलने वाली गुलाबी सुंडी को रोका जा सके। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक (कपास) डॉ राम प्रताप सिहाग ने गुलाबी सुंडी की रोकथाम के लिए किए जाने वाले समुचित प्रबन्धों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।